डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 20, मीका 1-3, मीका का संदेश

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ॰ गैरी येट्स हैं, जो 12 की पुस्तक पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह व्याख्यान 20, मीका 1-3, मीका का संदेश है।

मीका की पुस्तक पर हमारे दूसरे पाठ में, हम पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को अधिक ध्यानपूर्वक पढ़ने जा रहे हैं, लेकिन मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि मीका की सेवकाई की संरचना, संदेश और अंतिम योगदान क्या था।

मीका आठवीं सदी में असीरियन संकट के दौरान यहूदा में उपदेश देते हैं। उनके पास एक किताब है जो बहुत ही कठोर शब्दों में न्याय की चेतावनी देती है कि यरूशलेम को खेत की तरह जोता जाएगा और असीरियन सेना यहूदा में आएगी, लेकिन साथ ही उद्धार का वादा भी है, अंतिम बहाली का वादा भी है। यहाँ तक कि मीका की किताब की संरचना भी इसे दर्शाती है।

पुस्तक में तीन मुख्य भाग हैं, जो सुनने के लिए शब्द द्वारा शुरू किए गए हैं। अध्याय एक और दो में सुनने के लिए एक संदेश है जिसमें सैन्य आक्रमण और निर्वासन शामिल है, लेकिन फिर परमेश्वर अपने लोगों के बचे हुए हिस्से को वापस लाता है और उन्हें एक बार फिर से एक राष्ट्र और लोगों में बदल देता है। पुस्तक के मध्य भाग में सुनने के लिए एक संदेश है, जहाँ उद्धार का वादा अधिक प्रमुख हो जाता है।

यरूशलेम में यहूदा पर परमेश्वर द्वारा यह न्यायदंड थोपे जाने के बाद, इस्राएल का नवीनीकरण और पुनर्स्थापन होगा और सिथ्योन परमेश्वर के राज्य का केंद्र बन जाएगा क्योंकि यह पुनर्स्थापित हो चुका है। शांति होगी और दाऊद का मसीहा इस्राएल पर शासन करेगा। फिर अध्याय छह और सात में, सुनने के लिए आह्वान किया गया है।

यहूदा के लोगों की वाचा के अनुसार न बन पाने की अंतिम याद दिलाई गई है, जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें बनने के लिए कहा था। अध्याय सात की आयत एक से सात में यहूदा पर न्याय आने पर विलाप और शोक होता है। हम इस संकट के बीच में रहने वाले एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में मीका के व्यक्तिगत दर्द को देखते हैं।

लेकिन पुस्तक के अंत में अध्याय सात, श्लोक आठ से 20 में यह आशा भी है कि असीरियन निर्वासन में जो कुछ हुआ है, उस पर शोक, विलाप और दुःख, आनंद और पुनर्स्थापना के समय में बदल जाएगा। इसलिए, जब हम इसे देखते हैं, तो हम न्याय और उद्धार का एक शक्तिशाली संदेश देखते हैं। याद रखें कि हम यिर्मयाह अध्याय 26, श्लोक 17 से 19 से सीखते हैं कि मीका के संदेश ने हिजकिय्याह को परमेश्वर की ओर मुड़ने और उत्तरी राज्य पर पड़ने वाले न्याय से यहूदा को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तो, मीका इस संदेश को कैसे संप्रेषित करता है? वह अपने समय के लोगों से क्या कहता है? और फिर हम इस बारे में भी सोचेंगे और चिंतन करेंगे कि हमारे लिए उस संदेश का अनुप्रयोग क्या है। अध्याय एक में, हमारे पास न्याय का संदेश है कि इस संदेश का ध्यान यहूदा और यरूशलेम पर केंद्रित होने वाला है। लेकिन जिस तरह से हमने भविष्यवक्ता मीका को देखा, जब उसे उत्तरी राज्य की सेवा करने और न्याय के एक बहुत ही अलोकप्रिय संदेश का प्रचार करने के लिए बुलाया गया था, उसी तरह आमोस उस संदेश को सुनाने में महान बयानबाजी कौशल का उपयोग करता है।

वह राष्ट्रों के न्याय के बारे में बात करके शुरू करता है। फिर वह यहूदा के न्याय की ओर मुड़ता है। और फिर अंत में वह उन लोगों पर हथौड़ा गिराता है जिन्हें वह वास्तव में उपदेश दे रहा है और उत्तरी राज्य के न्याय के बारे में बात करता है।

मीका पहले अध्याय में कुछ ऐसा करने जा रहा है जो मुझे लगता है कि उसी तरह के बयानबाजी कौशल को दर्शाता है। हमें पादरी और शिक्षक के रूप में याद दिलाया जाता है कि हमारे पास प्रचार करने के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। सुनिश्चित करें कि हम इस बारे में भी सोचें कि हम उस संदेश को कैसे संप्रेषित करते हैं।

हमारी शक्ति हमारी बयानबाजी कौशल से नहीं आती है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसका उपयोग परमेश्वर सुसमाचार का संचार करते समय कर सकता है। और इसलिए, मीका कुछ ऐसा करने जा रहा है जो आमोस के समान ही है। वह राष्ट्रों और दुनिया पर आने वाले परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करके शुरू करता है।

फिर, वह सामरिया पर आने वाले परमेश्वर के न्याय पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है। और फिर, अंत में, वह इस संदेश के साथ समापन करने जा रहा है कि यह न्याय यहूदा और यरूशलेम पर आने वाला है। 12 की पुस्तक में, मुझे लगता है कि मीका की पुस्तक में हम जो महत्वपूर्ण चीजें देखते हैं, उनमें से एक वह न्याय है जिसके बारे में होशे और आमोस की पुस्तक में बात की गई है, और इन पूर्ववर्ती पुस्तकों में जो उत्तरी राज्य पर केंद्रित हैं, अब वह न्याय यहूदा के दक्षिणी राज्य पर भी आ रहा है।

और इसलिए, इस अध्याय की शुरुआत में, हम देखते हैं कि भगवान एक योद्धा के रूप में नीचे आते हैं। इस अध्याय में हमारे पास वह मूल भाव, वह छवि और वह रूपक प्रमुख है। और जब भगवान धरती पर उतरते हैं, तो हम इसे ईश्वरीय दर्शन कहते हैं।

यह परमेश्वर का प्रकटन है और परमेश्वर एक योद्धा के रूप में प्रकट होने जा रहा है और परमेश्वर की महानता, शक्ति और विस्मय के कारण पृथ्वी उसकी उपस्थिति में हिलती है, काँपती है और वास्तव में पिघलती है। हे पृथ्वी, ध्यान दो, और जो कुछ भी इसमें है, वह पुस्तक की शुरुआत है। क्योंकि प्रभु अपने स्थान से, अपने पवित्र मंदिर से बाहर आ रहा है।

वह नीचे आएगा, और वह पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलेगा, और पहाड़ उसके नीचे पिघल जाएँगे, और घाटियाँ आग के सामने मोम की तरह फट जाएँगी। और इसलिए, हमारे पास यहाँ परमेश्वर

के क्रोध और परमेश्वर के न्याय का सफेद पानी है। और जब प्रभु एक योद्धा के रूप में प्रकट होता है, तो पृथ्वी भी उसकी उपस्थिति में खड़ी नहीं रह पाती।

ठीक है। हालाँकि, परमेश्वर केवल पृथ्वी का न्याय करने के लिए नीचे नहीं आ रहा है। इस विशेष उदाहरण में परमेश्वर एक योद्धा के रूप में नीचे आ रहा है, इसका कारण यह है कि परमेश्वर नीचे आ रहा है, श्लोक 5, याकूब के अपराध और इस्राएल के घराने के पापों के कारण।

और इसलिए, फिर मीका सामरिया के न्याय के बारे में बात करेगा और यह कहता है, याकूब का अपराध क्या है? क्या यह सामरिया नहीं है? तो फिर, आमोस के साथ भी ऐसा ही हुआ, जब उत्तरी राज्य के लोगों ने आमोस को यहूदा के दक्षिणी राज्य के न्याय के बारे में बात करते हुए सुना और कैसे परमेश्वर पृथ्वी का न्यायी था, तो उन्होंने उस संदेश की सराहना की होगी। उसे एक बहुत अच्छी प्रेम भेंट मिली होगी क्योंकि लोग इस पर प्रतिक्रिया कर रहे थे। लेकिन याद रखें कि उस संदेश की अंतिम पंचलाइन यह है कि न्याय इस्राएल पर पड़ने वाला है।

खैर, मीका इसे उल्टा करता है और फिर वह कहने जा रहा है, याकूब का अपराध क्या है? क्या यह सामरिया नहीं है? लेकिन यहाँ उस आयत का दूसरा भाग है। यहूदा का उच्च स्थान क्या है? क्या यह यरूशलेम नहीं है? और इसलिए अब, दक्षिणी राज्य के लोगों ने कहा होगा, हाँ, हम समझते हैं कि परमेश्वर का न्याय उत्तरी राज्य पर क्यों पड़ने वाला है। उनके पास दाऊद के घराने का नेतृत्व नहीं है जिसे परमेश्वर ने स्वीकृत किया था और जो इस्राएल के सच्चे लोगों के नेता साबित हुए थे।

उनके पास यरूशलेम का मंदिर नहीं है, जो वह स्थान है जहाँ परमेश्वर ने अपने नाम को रहने के लिए चुना था। उनके पास दान और बेतेल और गिलगाल और इन सभी अन्य स्थानों पर धर्मत्यागी अभयारण्य हैं। लेकिन मीका का संदेश यह है कि उत्तरी राज्य की बेवफाई दक्षिणी राज्य तक पहुँच गई है।

और इसके परिणामस्वरूप, वही बात जो सामरिया के साथ हुई थी, अब यहूदा के साथ होने जा रही है। और इसलिए, प्रभु, पद 6 में, सामरिया को खुले मैदान में एक ढेर और दाख की बारियां लगाने का स्थान बना देंगे, और मैं उसके पत्थरों को घाटी में डाल दूंगा और उसकी नींव को उखाड़ दूंगा। सामरिया तबाह और बर्बाद होने जा रहा है।

हालाँकि, मीका अध्याय में बाद में, श्लोक 9 में यह भी कहता है, मैं गीदड़ों की तरह विलाप करूँगा और शूतुरमुर्गी की तरह विलाप करूँगा, क्योंकि उसका घाव असाध्य है, परमेश्वर के लोगों के घाव और चोट के बारे में बात करते हुए, और यह यहूदा तक पहुँच गया है। और यह मेरे लोगों के यरूशलेम के द्वार तक पहुँच गया है। और इसलिए, मीका की बयानबाजी सामरिया के न्याय और विनाश को एक साथ जोड़ना है क्योंकि यह यहूदा और यरूशलेम तक पहुँच गया है।

दक्षिणी राज्य पर असीरियन आक्रमण और आक्रमण का उसी तरह असर पड़ा जिस तरह उत्तरी राज्य पर पड़ा था। और जिस तरह यह केवल एक राजनीतिक दुर्घटना या 8वीं शताब्दी में सैन्य परिस्थितियों और स्थितियों के कारण नहीं हुआ था, यह परमेश्वर की ओर से प्रत्यक्ष न्याय है। इस पुस्तक की शुरुआत में बहुत प्रभावी ढंग से, हम दुनिया के न्याय से आगे बढ़ते हैं, परमेश्वर एक

योद्धा के रूप में राष्ट्रों पर रौंद रहा है, लेकिन अब विशेष रूप से अपने ही लोगों के खिलाफ एक योद्धा के रूप में आ रहा है।

सबसे पहले, सामरिया। यहूदा के लोग इससे सहमत होते, लेकिन अब यह न्याय यहूदा पर भी आने वाला है। इसलिए, जिस तरह से उन्होंने इसे प्रस्तुत किया है, उसमें वे बहुत प्रभावशाली हैं, लेकिन मुझे अभी भी विश्वास है कि यहूदा के लोगों के लिए इसे स्वीकार करना कठिन था।

और इसलिए, हम मीका को अध्याय 1 के दूसरे भाग में इस संदेश को और भी अधिक स्पष्ट करते हुए देखेंगे। फिर से, वह कुछ ऐसा करने जा रहा है जो बयानबाजी के मामले में शानदार है। और इस भाग में जो होता है वह यह है कि मीका हमें, भविष्यसूचक कल्पना और भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन की दृष्टि से, यहूदा के राष्ट्र में मार्च करते हुए, यरूशलेम के शहरों पर कब्ज़ा करते हुए असीरियन सेना की तस्वीर और छवि दिखाने जा रहा है। और यहाँ वह जो करने जा रहा है वह यह है कि वह विशेष रूप से कुछ समुदायों का नाम लेगा और लोगों को याद दिलाएगा या उन लोगों पर प्रभाव डालेगा जो इन विभिन्न समुदायों में रहते हैं कि ये स्थान परमेश्वर के न्याय में फंसने जा रहे हैं।

याद रखें कि असीरियन शिलालेख तथ्य के बारे में बात करते हैं, और असीरियन इतिहास इस तथ्य के बारे में बात करते हैं कि असीरियन ने यहूदा के 46 शहरों पर कब्ज़ा कर लिया था। खैर, मीका विशिष्ट शहरों का उल्लेख करके इसे बहुत वास्तविक और जीवंत बनाने जा रहा है। और जब हम अध्याय 1, श्लोक 10 से श्लोक 16 तक आगे बढ़ते हैं, तो आपको यह देखना चाहिए कि आप असीरियन सेना के साथ आगे बढ़ सकते हैं क्योंकि वे यहूदा की भूमि पर कब्ज़ा कर रहे हैं।

यशायाह अध्याय 10, श्लोक 28 से 34 में यशायाह हमारे लिए कुछ ऐसा ही करता है। वह हमारे लिए भविष्यसूचक कल्पना और रहस्योद्घाटन दोनों के माध्यम से चित्रित करता है कि यह कैसा होगा जब अशूर की सेनाएँ यहूदा के इन विभिन्न गाँवों और समुदायों से गुज़रेंगी। मीका इसके साथ जो करता है वह यह है कि वह इन विभिन्न समुदायों के नामों पर कई तरह के शब्द-क्रीड़ाएँ और शब्द-खेल बनाता है।

वह या तो उनके नाम या उनके ऐतिहासिक महत्व का संदर्भ देता है और उसे संदेश संप्रेषित करने के तरीके के रूप में उपयोग करता है। यह जो करता है वह यह है कि यह संदेश को अधिक प्रभावशाली बनाता है। याद रखें, मीका द्वारा इन संदेशों को लिखे जाने से पहले या मीका के शब्दों के रूप में दर्ज किए जाने से पहले, उन्हें मौखिक रूप से प्रचारित किया गया था।

वह यहूदा और यरूशलेम की सड़कों पर प्रचार कर रहा है, लोगों को आने वाले न्याय के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा है और उन लोगों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है जिन्होंने यह सब पहले सुना है। फिर से, उन्होंने न्याय के अपने इतिहास में भविष्यवक्ताओं से बार-बार और बार-बार चेतावनियाँ सुनी हैं। इसे वास्तविक और जीवंत बनाने के लिए, मीका यहूदा में मौजूद वास्तविक समुदायों और शहरों के बारे में बात करता है।

वह इन शहरों पर व्यंग्य और शब्दों का खेल करता है जो लोगों पर संदेश की गंभीरता को प्रभावित करता है। अगर मैं 8वीं सदी में मीका को उनके श्रोताओं में से एक के रूप में सुन रहा

होता और मैं यह संदेश सुन रहा होता, तो यह मुझे सोचने पर मजबूर कर देता कि अगर मैं उन गांवों में से किसी एक में रहता, तो वाह, यह न्याय हम पर आ रहा है। यह आश्चर्यजनक रूप से घर के करीब है।

अगर मेरे पास परिवार या रिश्तेदार या किसी कबीले या परिवार का हिस्सा होता जो इन अलग-अलग समुदायों से संबंधित होता, तो यह मुझे जगा देता और मुझे इस संदेश की गंभीरता का एहसास कराता। यह सब अंततः मीका के संदेश के चौंकाने वाले मूल्य में योगदान देता है। यरूशलेम के लोगों ने इन सबमें कहा होगा, हम सुमेरियन इज़राइल के लोगों जितने बुरे नहीं हैं।

हमारे पास धर्मत्याग का वह लंबा इतिहास नहीं है जो उनके पूजा स्थलों और उनके पवित्र स्थलों की विशेषता थी। हमारे पास यरूशलेम के मंदिर में सोने के बछड़े नहीं हैं, लेकिन उनके पास धर्मत्यागी वेदियाँ और ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें आहाज मंदिर में लाया है। हम बाल के उपासक नहीं हैं जिस तरह से उत्तरी राज्य में अहाब के अधीन लोग थे, लेकिन मीका का कहना है कि परमेश्वर दक्षिणी राज्य का उसी तरह न्याय करेगा जिस तरह से वह सामरिया का न्याय करेगा।

इसलिए, वह इन संकेतों और शब्दों के खेल से शुरू करता है। अगर कोई भविष्यवक्ता आज ऐसा करने जा रहा है और अमेरिका पर ईश्वर के फैसले या इस तरह की चीज़ों के बारे में बात कर रहा है, तो वह इस तरह की बातें कह सकता है: वाशिंगटन बह जाएगा। या वॉटरटाउन में वाटरलू आने वाला है।

वहाँ एक ऐतिहासिक संकेत है, और आप जानते हैं कि यह किस बारे में है। लॉस एंजिल्स, स्वर्गदूतों का शहर, राक्षसों का अड्डा बन गया है। मैं लिंगबर्ग शहर में रहता हूँ, और दक्षिण के इतिहास में, हमारे पास लिंगिंग और अन्याय और भयानक चीज़ों का इतिहास है जो वहाँ हुई हैं।

इसलिए, अगर कोई भविष्यवक्ता यह कहे कि लिंगबर्ग में लिंगिंग होने वाली है, तो इससे कई तरह के अर्थ निकलेंगे जो हमें चौंका देंगे और संदेश की गंभीरता भी। सेंट लुइस और सेंट पॉल अपवित्र शहर बन गए हैं। तो ये शब्दों के खेल हैं।

जब आप इस पर चलते हैं, तो यह हमें मुस्कुराने पर मजबूर कर देता है, लेकिन इसका उद्देश्य यह नहीं है। इसका उद्देश्य संदेश की गंभीरता को प्रभावित करना था। इसलिए, भविष्यवक्ता यह कहकर शुरू करता है, इसे गत में मत बताओ और बिल्कुल मत रोओ।

इसलिए, इसे गत में मत कहो। यहाँ शब्दों के खेल के बजाय हमारे पास एक ऐतिहासिक संकेत है। ये वे शब्द हैं जो शाऊल की मृत्यु के बाद इस्तेमाल किए गए हैं।

इस पलिशती शहर गत में यह मत कहो। हम नहीं चाहते कि हमारे दुश्मनों को इस राष्ट्रीय आपदा के बारे में पता चले जो घटित हुई है। उस समय की ओर इशारा करके जब इस्राएल ने अपना पहला राजा खो दिया था, यह हमें याद दिला रहा है कि राष्ट्रीय आपदा का समय आ रहा है।

समानांतर पंक्ति कहती है, बेथ-ले-अफ़ा में बिल्कुल भी मत रोना। इसलिए, उन्हें रोना नहीं है, और उन्हें शोक नहीं करना है। बेथ-ले-अफ़ा हिब्रू शब्द अफ़ार से संबंधित है।

तो, यहाँ धूल का घर, बेथ-ले- अफ्रा में कहा गया है , धूल के घर में, उन्हें खुद को धूल में लोटना है। धूल और राख और टाट और ये सभी चीजें शोक से जुड़ी हैं। इसलिए, इसे गत में मत बताओ, बिल्कुल मत रोओ।

हम नहीं चाहते कि उन्हें इस विपत्ति के बारे में पता चले। लेकिन यहूदा के शहरों में, वे रोएँगे, वे उस विपत्ति के कारण विलाप करेंगे जो उन पर आने वाली है। धूल का घर धूल में लोटने वाला है।

शाफिर के निवासियों, नग्नता और लज्जा में अपने मार्ग पर आगे बढ़ो। शाफिर शब्द का अर्थ है कुछ ऐसा जो प्यारा और सुंदर हो। लेकिन इसके बजाय हमें जो मिलता है वह यह है कि वहाँ रहने वाले लोग निर्वासित होने जा रहे हैं।

उन्हें कैदियों की तरह ले जाने पर नग्नता और शर्म की कुरूपता होगी। इसलिए सुखद शहर एक बहुत ही अप्रिय अनुभव से गुजरने वाला है।

ज़ानान के निवासी बाहर नहीं आते। इसलिए यह स्थान ज़ानान हिब्रू क्रिया यत्साह की तरह लगता है , जिसका अर्थ है बाहर जाना। इसमें दो व्यंजन हैं। इसलिए ज़ानान के लोग यत्साह नहीं कर पाएँगे , वे बाहर नहीं जा पाएँगे।

वे आने वाले हमले से बच नहीं पाएँगे क्योंकि वे असीरियन सेना द्वारा घेर लिए जाएँगे। घेराबंदी में जो कुछ हुआ, उसमें से एक यह था कि उस शहर के निवासी वहाँ से निकल नहीं पाए। वे भागकर भाग नहीं पाए और अंततः, उन्हें तब तक वहाँ रखा जाएगा जब तक वे भूख से मर नहीं जाते या उनका भोजन और पानी खत्म नहीं हो जाता।

इसलिए ज़ानान बाहर नहीं जा पाएगा। इसमें विडंबना है। बेथ एट्ज़ेल का विलाप, जो कि बगल का घर है, प्रभु तुमसे उसका खड़ा होने का स्थान छीन लेगा और बेथ एट्ज़ेल, जो कि बगल का घर है, वे अपने पड़ोसी शहरों की मदद नहीं कर पाएँगे क्योंकि वे भी इस न्याय से प्रभावित होने वाले हैं।

वे अपने पड़ोसियों को सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम नहीं होंगे क्योंकि वे अपने स्वयं के विनाश पर शोक मनाने में व्यस्त होंगे। पद 12 में, मारोत के निवासियों ने, शब्द माराह , कड़वाहट, रूथ की पुस्तक में, नाओमी कहती है, मुझे नाओमी, सुखद मत कहो। मुझे माराह कहो क्योंकि प्रभु ने मेरे खिलाफ बहुत ही कड़वाहट से काम किया है।

बिटरटाउन के निवासी , विडंबना यह है कि, कुछ अच्छा होने का इंतज़ार कर रहे हैं, लेकिन ऐसा होने वाला नहीं है। इसके बजाय, भगवान की ओर से राह , आपदा और विपत्ति उतर आई है। इसलिए बिटरटाउन को आपदा और विपत्ति का सामना करना पड़ेगा।

वे अच्छे और आशीर्वाद का अनुभव नहीं करने जा रहे हैं। फिर से, यह बात कर रहा है कि अशूर की सेना के आगे बढ़ने पर क्या होता है। फिर इसका पहला छंद यह कहकर समाप्त होने जा रहा है, क्योंकि प्रभु की ओर से विपत्ति यरूशलेम के फाटक तक आ पहुंची है।

हमने इन शहरों की श्रृंखला पर काम किया है, और हमने उन विभिन्न स्थानों के बारे में बात की है जो न्याय के अंतर्गत आने वाले हैं। लेकिन कविता का पहला छंद यरूशलेम शहर पर ध्यान केंद्रित करके समाप्त होता है। असीरियन सेना का लक्ष्य, अंतिम लक्ष्य, यरूशलेम शहर तक पहुँचना होगा।

याद रखें कि 701 में जब उन्होंने यहूदा के शहरों पर कब्ज़ा कर लिया था, तो वे क्या करने जा रहे हैं? वे यरूशलेम शहर को घेरने जा रहे हैं, और वे राजधानी और धार्मिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में तब तक घेराबंदी करने जा रहे हैं जब तक कि भगवान शहर को बचा नहीं लेते। इसलिए, दूसरे छंद में हम इन शब्दों के खेल पर वापस आते हैं। लकीश शब्द टीम या घोड़ों के लिए शब्द, राकिश से मिलता जुलता है।

याद रखें कि लाकीश का उद्देश्य यरूशलेम शहर की सुरक्षा के लिए एक सैन्य छावनी और एक किला बनाना था। इसलिए, यदि वे लाकीश के निवासियों को रथों पर सवार करने के लिए टीमों और घोड़ों को तैयार कर रहे हैं, तो ऐसा लगता है कि वे सुरक्षा प्रदान करने जा रहे हैं। लेकिन वास्तव में लाकीश को असीरियन द्वारा मिटा दिया जाएगा।

यह उनके द्वारा जीता जाने वाला है। वे अपनी इच्छानुसार रथों को जोत सकते हैं, लेकिन वे इस दुश्मन सेना के हमले का सामना करने में सक्षम नहीं होंगे। उन्हें यरूशलेम की रक्षा करने के बजाय रथों को जोतना होगा।

उन्हें शहर से जल्दी से जल्दी बाहर निकलने के लिए टीम को तैयार करना होगा ताकि वे दुश्मन से बचकर भाग सकें। लाकीश को जिस सुरक्षा के लिए बनाया गया था, वह वहाँ नहीं होगी। और यही बात इस शब्द-खेल से बताने की कोशिश की जा रही है।

यह आयत यह भी कहती है कि लाकीश सियोन की बेटी के लिए पाप की शुरुआत थी क्योंकि तुममें इस्राएल के अपराध पाए गए थे। तो, हम यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं? मुझे लगता है कि लाकीश पाप की शुरुआत बन गई है। यह यहूदा और यरूशलेम के लोगों के लिए पाप का स्रोत रहा है क्योंकि यह उन कारणों में से एक रहा है कि उन्होंने प्रभु पर भरोसा करने के बजाय अपनी सैन्य शक्ति पर भरोसा किया है।

उन्होंने सोचा है कि वे इस हमले से बचने के लिए सैन्य रूप से पर्याप्त सुरक्षित हैं। वे ऐसा करने में सक्षम नहीं होने जा रहे हैं। इस झूठे अभिमान ने उन्हें पश्चाताप न करने और प्रभु के पास उस तरह से वापस न आने के लिए प्रेरित किया है जिस तरह से उन्हें चाहिए था।

पद 14 में, शब्द-खेल जारी है; इसलिए, तुम मोरेशेत गत को विदाई उपहार दोगे। शब्द-खेल के बारे में सोचने से पहले, मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि मोरेशेत मीका का गृहनगर था। एक भविष्यवक्ता के रूप में मीका को वास्तव में अपने गृहनगर पर निर्णय की घोषणा करने का अवांछित कर्तव्य है।

इस दर्द और शब्दों के खेल और ये शब्द-खेल लोगों को आने वाले न्याय के लिए मज़ाक उड़ाने का एक तरीका है। यह दर्द उसके लिए बहुत वास्तविक है। यह उसके अपने जीवन और उसके अपने परिवार और उसके अपने दोस्तों को प्रभावित करेगा क्योंकि यह उन पर आएगा। इसलिए, शब्दों के खेल और यहाँ होने वाली चीज़ों का उद्देश्य इन लोगों को उनके पाप की गंभीरता का एहसास कराना है, इस उम्मीद में कि वे इस संदेश को गंभीरता से लेंगे और पश्चाताप करेंगे और भगवान की ओर लौटेंगे।

मोरेशेथ गत के साथ जो शब्द-खेल है, वह यह है कि मोरेशेथ शब्द मो'ओराशा शब्द जैसा लगता है, जिसका अर्थ है मंगेतर। तो, हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जिसकी सगाई हो चुकी है। खैर, मोरेशेथ गत, यह शहर जो मंगेतर जैसा लगता है, वास्तव में असीरियन सेना को विदाई उपहार या दहेज के रूप में दिया जाने वाला है।

एक तरह से, वे लूट का माल बनने जा रहे हैं जिसे असीरियन सेना ले जाएगी। इसलिए, यह शब्द जो किसी सकारात्मक चीज़ से जुड़ा हुआ लगता है - मो'ओराशा, विवाह में सगाई और परिवार में होने की खुशी के लिए शब्द - एक अशुभ संदेश बन जाता है कि उन्हें उसी तरह दिया जाएगा जैसे दुल्हन का पिता दूल्हे के परिवार को दहेज देता है। यह शहर असीरियन को दिया जाने वाला है।

अगला शहर जिसका उल्लेख किया गया है वह है अकजीब के घर, जो अकज़ाब शब्द से बहुत मिलता-जुलता है, जिसका अर्थ है धोखा या झूठ। अकजीब के घर इस्राएल के राजाओं के लिए एक धोखा देने वाली चीज़ होंगे। इस्राएल के राजाओं ने सोचा कि विभिन्न शहर और गाँव और किले और वहाँ मौजूद सभी चीज़ें, उनके शहर की संख्या सुरक्षा प्रदान करेगी।

शहर के चारों ओर की दीवारें उन लोगों की रक्षा करती हैं जो उसके अंदर रहते हैं। लेकिन अकजीब के घर एक धोखेबाज़ चीज़ होने जा रहे हैं। वे किसी भी तरह से बाधा नहीं डालेंगे।

वे अशूर की सेना की प्रगति में बाधा नहीं डालेंगे क्योंकि अशूर व्यवस्थित रूप से यरूशलेम की ओर अपना रास्ता बनाने जा रहे हैं। अकजीब उन शहरों में से एक होगा जो इस सब के बीच में पड़ता है।

प्रभु पद 15 में कहते हैं, मैं तुम्हारे पास एक विजेता लाऊंगा, मारेशा के निवासियों। मारेशा शब्द याराश शब्द से संबंधित प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है जीतना, अधिकार करना। यह ताकत का शब्द है। यह इस तथ्य के बारे में बात करता है कि इस भूमि पर इस्राएल का अधिकार है।

हालाँकि, आधिपत्य वाला शहर, विजयी शहर, अंततः जीत लिया जाएगा और यह असीरियन सेना का कब्ज़ा बन जाएगा। यहाँ इस शहर के नाम का जिस तरह से इस्तेमाल किया गया है, उसमें विडंबना है। इसराइल की महिमा, जैसे ही यह समाप्त होगा, इसराइल की महिमा अदुल्लाम में आ जाएगी।

जैसा कि हमने इस लंबे संदेश की शुरुआत में अलग-अलग शहरों के बारे में बताया था, अब शब्दों के खेल के बजाय, हमारे पास यहाँ एक ऐतिहासिक संकेत है। 1 शमूएल 22 आयत 1 में, अदुल्लाम उन जगहों में से एक है जहाँ दाऊद शाऊल से भागते समय भागेगा। जिस तरह से

दाऊद को भागना पड़ा और अपने दुश्मन से बचने के लिए उसे अपने घोड़े पर सवार होना पड़ा, वही बात अब यहूदा के राजा के साथ होने जा रही है।

यह एक बहुत ही अशुभ संदेश है कि परमेश्वर यहूदा के राज्य के साथ क्या करने की योजना बना रहा है। फिर से, इस उपदेश का ध्यान इस बात पर है कि एक भविष्यवक्ता या उपदेशक संदेश के आरंभ, मध्य और अंत में किस पर ध्यान केंद्रित करता है; वह इसी पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा है। शालोम का शहर, यरूशलेम, इस सब में फंसने वाला है।

घाव लाइलाज है, श्लोक 9. यह यहूदा तक पहुँच गया है। यह मेरे लोगों के द्वार, यरूशलेम तक पहुँच गया है, श्लोक 12, क्योंकि पहले श्लोक के अंत में यरूशलेम के घराने पर प्रभु की ओर से विपत्ति आई है। दूसरे श्लोक की शुरुआत में, लाकीश के निवासियों, अपने घोड़ों को रथों पर जोतो।

यह सिष्योन की बेटी के लिए पाप की शुरुआत थी। फिर, इसके अंत में, अध्याय 1, श्लोक 16 में, अपने प्यारे बच्चों के लिए अपने आप को गंजा बनाओ और अपने बाल कटवाओ। अपने आप को उकाब की तरह गंजा बनाओ, क्योंकि वे तुम्हारे पास से निर्वासन में चले जाएँगे।

पूरे उपदेश में, वह यरूशलेम के न्याय पर ध्यान केंद्रित करता है। फिर इसके अंत में, पूरे राष्ट्र के लिए निर्वासन की चेतावनी दी जाती है। जब यरूशलेम गिरेगा, तो बाकी राष्ट्र भी उसके साथ जाएगा।

जो कुछ उत्तरी इस्राएल राज्य के साथ हुआ है, वही दक्षिणी राज्य के साथ भी होने वाला है। जब हम यह संदेश सुनते हैं और इसकी गंभीरता को देखते हैं, जब हम देखते हैं कि मीका ने इस संदेश को किस तरह से प्रस्तुत किया है, तो हमें कहना पड़ता है कि वाह, लोगों को इसे सुनना ही था। इसे इतनी कुशलता, प्रभावकारिता और जोश के साथ उन तक पहुँचाया गया है।

इस संदेश का उन पर प्रभाव पड़ना ज़रूरी था। लेकिन जब तक हिजकिय्याह पश्चाताप नहीं करता, तब तक ऐसा लगता है कि न्याय की इन चेतावनियों को बड़े पैमाने पर नज़रअंदाज़ किया जाता है। इसलिए न्याय पहले ही गिर जाता है।

अध्याय 2 में, जैसा कि हम पहले खंड में आगे बढ़ते हैं, यह खंड जो करने जा रहा है, वह यह है कि, जैसा कि यह अध्याय 1 का पूरक है, हमारे पास न्याय की तस्वीर है। हमारे पास आक्रमण है। हमारे पास पहले आने वाले न्याय की घोषणा है।

अध्याय 2 में, हमें इस बात की अधिक व्याख्या मिलती है कि यह न्याय क्यों आता है। मीका जिस प्राथमिक बात पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है, वह यह है कि मीका यहूदा के नेताओं के पापों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है। 8वीं शताब्दी के भविष्यवक्ताओं में आम विषय पर वापस जाते हुए, न्याय की समस्या और यहूदा में नागरिक नेताओं द्वारा उस तरह के न्याय का पालन करने में विफलता जो मूसा के कानून में निर्धारित और निर्धारित की गई थी।

लेकिन इस खंड में, उन भविष्यवक्ताओं पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिन्होंने इस्राएल के आध्यात्मिक नेताओं के रूप में लोगों को गुमराह किया है। विडंबना यह है कि, उन समूहों में से एक जो मीका के सबसे अधिक विरोध में खड़े होने जा रहे हैं, जो प्रभु के वचन का प्रचार कर रहे हैं, वे अन्य भविष्यवक्ता होंगे जो परमेश्वर के संदेश का प्रचार नहीं कर रहे हैं। जैसा कि मीका परमेश्वर के न्याय का प्रचार कर रहे हैं और लोगों को बता रहे हैं कि उन्हें क्या सुनने की आवश्यकता है, ये अन्य भविष्यवक्ता परमेश्वर के आशीर्वाद का प्रचार कर रहे हैं, और वे वही प्रचार कर रहे हैं जो लोग सुनना चाहते हैं।

इसलिए, लोगों के लिए यह कठिन है, मीका के संदेश की करुणा और जुनून और प्रभावशीलता और सच्चाई के बावजूद, जैसा कि वह अध्याय 1 में आक्रमण के बारे में बात कर रहा है, एक चीज जो उन्हें इसे सुनने से रोकती है, वह है अन्य भविष्यवक्ताओं के बहुमत द्वारा उन्हें दिया जा रहा जवाबी संदेश। इसलिए अध्याय 2 श्लोक 1 से 5 में, सामाजिक न्याय का यह मुद्दा और यहूदा के नेता कैसे इसका पालन करने में विफल रहे हैं और लोगों को गुमराह किया है, यहाँ इस पर जोर दिया गया है। और शब्द रा'ह की तीन बार पुनरावृत्ति है, जो इन लोगों ने किया है।

भगवान का यही अनुमान है। वे केवल कानून में हेराफेरी नहीं कर रहे हैं। वे केवल कानून का उपयोग नहीं कर रहे हैं।

वे वही कर रहे हैं जो परमेश्वर की नज़र में पूर्ण नैतिक बुराई है, और उसके परिणामस्वरूप, न्याय आने वाला है। इसलिए, भविष्यवक्ता कहता है, हाय उन लोगों पर जो दुष्टता की योजना बनाते हैं और अपने बिस्तर पर बुरे काम करते हैं। जब सुबह होती है, तो वे इसे अंजाम देते हैं क्योंकि यह उनके हाथ की शक्ति में है।

वे खेतों का लालच करते हैं और उन्हें और घरों को हड़प लेते हैं और उन्हें छीन लेते हैं। वे एक आदमी को उसके घर में और एक आदमी को उसकी विरासत में प्रताड़ित करते हैं। इसलिए, हम यहूदा में वही होता हुआ देखते हैं जो उत्तरी राज्य में हुआ था।

यहाँ अत्याचार है। यशायाह इस बारे में बात करता है। अध्याय 5, श्लोक 8 से 10, उन लोगों पर हाय जो खेत पर खेत जोड़ते हैं और उन्हें हड़प लेते हैं और वे अपने पड़ोसियों की सम्पत्तियों पर लालच करते हैं और उन पर अत्याचार करते हैं और उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं और उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं और अपने लालच और अधिक से अधिक पाने की इच्छा के कारण सभी प्रकार की बेईमानी करते हैं।

मीका उन सामाजिक पापों के बारे में भी प्रचार करने जा रहा है। श्लोक 4 में यह कहा गया है: इसलिए यहोवा कहता है, देखो, मैं इस परिवार के विरुद्ध विपत्ति की योजना बना रहा हूँ। इसलिए श्लोक 1 में, वे योजना बनाते हैं और अपने बिस्तर पर बुराई करते हैं, रा'आह।

प्रभु उन पर विपत्ति लाने जा रहे हैं, क्योंकि वे जो कर रहे हैं। तुम अपनी गर्दन से इस बुराई को नहीं हटा पाओगे और तुम अतीत की तरह घमंड से नहीं चलोगे, क्योंकि यह विपत्ति का समय होगा, रा'आह। इसलिए, प्रभु उन लोगों के खिलाफ रा'आह लाने जा रहे हैं जो लोगों ने किए हैं, और न्याय का एक प्रमुख कारण सामाजिक अन्याय होने जा रहा है जो हो रहा है।

हालाँकि, अध्याय 2, श्लोक 6 में, जैसा कि हम पहले ही बात कर चुके हैं, मीका झूठे भविष्यवक्ताओं के पापों पर भी ध्यान केंद्रित करता है जो इस संदेश का प्रचार कर रहे हैं जो उनका संदेश है; यह प्रभु का वचन नहीं है। वे लोगों को कुछ ऐसा वादा कर रहे हैं जो वे प्रदान नहीं कर सकते क्योंकि वे लोगों से बस इतना कह रहे हैं, अरे, तुम परमेश्वर के लोग हो; चीजें अच्छी होने जा रही हैं, और जब मीका उन्हें उपदेश देता है तो उनकी प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। वे कहने जा रहे हैं, उपदेश मत दो, इस तरह वे उपदेश देते हैं।

किसी को ऐसी बातों का प्रचार नहीं करना चाहिए। अपमान हमें नहीं बख्शेगा। इसलिए, मीका के सामने न केवल इन लोगों को संदेश की सच्चाई के बारे में समझाने की चुनौती है, बल्कि उसके सामने ये भविष्यवक्ता भी हैं जो उसका विरोध कर रहे हैं और एक विपरीत संदेश का प्रचार कर रहे हैं, और वे कह रहे हैं, मीका, तुम्हें इन बातों का प्रचार नहीं करना चाहिए।

हमने आपका संदेश सुना, जिसमें आपने यहूदा के शहरों पर बहुत सारे शब्द-खेल और व्यंग्य किए हैं। आपको इस बारे में बात नहीं करनी चाहिए क्योंकि अपमान, आपदा और विपत्ति हमें नहीं घेरने वाली है। आप किस बारे में बात कर रहे हैं? हम ईश्वर के लोग हैं।

अब, दिलचस्प बात यह है कि जब वे यह टिप्पणी करते हैं तो वे उपदेश नहीं देते हैं; यहाँ जिस शब्द का इस्तेमाल किया गया है वह हिब्रू शब्द नताफ़ है। यह भविष्यवाणी के लिए सामान्य शब्द नहीं है, मूल शब्द नव है, यह शब्द नताफ़ है। अन्य स्थानों पर, इसका विचार या अर्थ है, टपकना या टपकने वाली किसी चीज़ का मूल अर्थ।

न्यायियों के अध्याय 5 की आयत 4 में इसका अर्थ टपकना है। आमोस के अध्याय 9 में इसका यही अर्थ है। पहाड़ और पहाड़ियाँ शराब से टपकने वाली हैं। नीतिवचन के अध्याय 5 में, यह शब्द व्यभिचारिणी की मोहक बोली के लिए इस्तेमाल किया गया है। उसके शब्द शहद की तरह टपकते हैं।

वे मीका से सिर्फ़ यह नहीं कहते कि, भविष्यवाणी मत करो, नताफ़ का प्रचार मत करो, इस टपकते संदेश का प्रचार मत करो। वे या तो इसे ऐसी चीज़ के तौर पर खारिज कर रहे हैं जिस पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, कि मीका किसी तरह लोगों को धोखा देने की कोशिश कर रहा है, या वे शायद यह कह रहे हैं कि, मीका, मुँह से झाग निकालना बंद करो। इस तरह के संदेश का प्रचार करना बंद करो।

मीका इसे पलटने के लिए क्या करता है, जब वे कहते हैं, नताफ़ का प्रचार मत करो, वह पलटकर कहता है, इस तरह वे नताफ़ का प्रचार करते हैं, और वह उनके शब्दों को उसी तरह वर्गीकृत करता है। किसी को मुँह से झाग निकलने वाले इस संदेश का प्रचार नहीं करना चाहिए कि विपत्ति हमें पछाड़ने वाली है। हालाँकि, आप ही हैं जो वास्तव में यहाँ बेकार संदेश का प्रचार कर रहे हैं, और अंततः विपत्ति हमें पछाड़ने वाली है।

हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि हमारे पास भविष्यवक्ताओं के ये दो समूह हैं, हमारे पास मीका और यशायाह जैसे लोग हैं जो लोगों को आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे

रहे हैं, कि उन्हें इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता है, कि असीरियन संकट वास्तविक है और इसके पीछे ईश्वर है, बनाम भविष्यवक्ता जो कह रहे थे, हाँ, हम एक कठिन समय से गुजर रहे हैं या हम एक कठिन समय से गुजर रहे हैं, लेकिन हम ईश्वर के चुने हुए लोग हैं और यह आपदा अंततः हमें निगल नहीं जाएगी। आपको क्या लगता है कि लोग कौन सा संदेश सुनने के लिए इच्छुक थे? जाहिर है, आज भी ऐसा ही है। जब लोग ईश्वर के प्रेम के बारे में बात करते हैं और उसे उसके न्याय और उसकी पवित्रता से अलग करते हैं, तो यह कुछ ऐसा होता है जो लोगों को आकर्षित करता है।

यह एक ऐसा संदेश है जिसे वे सुनना चाहते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि उन्हें यह संदेश सुनना चाहिए। मीका आगे बढ़कर, पद 11 में व्यंग्यात्मक तरीके से कहता है, क्योंकि वह झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ इस संघर्ष में लगा हुआ है, उसने कहा, आप जानते हैं, अगर कोई व्यक्ति इस बारे में भविष्यवाणी करता है और हवा और झूठ बोलता है, तो वे मेरे उपदेश को नताफ के रूप में वर्गीकृत करेंगे, मुंह से झाग निकलने वाला। मैं उनके बारे में बात करने जा रहा हूँ जो हवा और झूठ बोलते हैं।

उनके शब्द बेकार हैं। वह कहते हैं कि अगर कोई ऐसा भविष्यवक्ता होता जो झूठ बोलता और कहता, मैं तुम्हें शराब और मजबूत पेय के बारे में उपदेश देने जा रहा हूँ, तो वह इन लोगों के लिए सही भविष्यवक्ता होता। अगर कोई भविष्यवक्ता सड़क पर आकर कहता, हे दोस्तों, तुम्हारे भविष्य में बहुत सारी बीयर और शराब होगी क्योंकि भगवान हमें आशीर्वाद देने जा रहे हैं, और हम समृद्ध होने जा रहे हैं और सब कुछ ठीक होने जा रहा है, तो यह बिल्कुल वही संदेश होगा जो ये लोग सुनना चाहेंगे।

तो, हमें भविष्यवाणियों के संघर्ष की वास्तविकता मिलती है जिसका सामना अक्सर परमेश्वर के इन सच्चे भविष्यवक्ताओं को करना पड़ता था और अनुभव करना पड़ता था। मीका और यशायाह ने आठवीं सदी में इसका सामना किया। यह मीका की सेवकाई का एक वास्तविक हिस्सा है।

जब वह सड़कों पर प्रचार कर रहा है, तो शायद कुछ अन्य भविष्यवक्ता भी होंगे जो सड़क के ठीक नीचे एक अलग संदेश का प्रचार कर रहे होंगे या शायद जो उसे बाधित करने और उसके द्वारा प्रचारित संदेश में हस्तक्षेप करने की कोशिश कर रहे होंगे। एक मिनट रुको, मीका। हमें नस्ल पर आपत्ति है।

हम ईश्वर के लोग हैं। विपत्ति हम पर क्यों हावी होगी? सातवीं सदी में भविष्यवक्ता यिर्मयाह भी इसी बात से निपटने जा रहा है। यिर्मयाह अक्सर इन भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करने जा रहा है जो शालोम, शालोम की घोषणा करते हैं।

लेकिन यिर्मयाह कहता है, समस्या यह है कि कोई शालोम नहीं है। विपत्ति आ रही है। यिर्मयाह अध्याय 23, लोग यह संदेश सुनना चाहते हैं और यह वह संदेश है जो तब लोकप्रिय है और जो उन्हें आकर्षित करता है क्योंकि यह लोगों से वादा करता है कि परमेश्वर अंततः उन्हें संकट से बचाएगा और मुक्ति दिलाएगा।

लेकिन समस्या यह है कि यह परमेश्वर का वचन नहीं है। यह केवल इन भविष्यवक्ताओं की कल्पना है। मीका और यिर्मयाह जैसे सच्चे भविष्यवक्ता, जो लोगों को न्याय की चेतावनी दे रहे हैं, वे ही परमेश्वर की सलाह पर खड़े हुए हैं।

वे परमेश्वर की योजनाओं को जानते हैं। वे परमेश्वर के इरादों को जानते हैं। वे लोगों को उन इरादों की घोषणा करने के लिए आ रहे हैं, लेकिन लोग इसके बजाय उन भविष्यवक्ताओं की बात सुनना चाहते हैं जो केवल अपने मन के खोखले, व्यर्थ, भ्रामक सपने दे रहे हैं।

यही यहाँ अंतर है। अब, हम समझते हैं कि अगर हम यहाँ दर्शकों में होते, तो हम इन सकारात्मक भविष्यवक्ताओं को सुनने की इच्छा को समझते। हम समझते हैं कि लोग ऐसा क्यों करना चाहेंगे।

हम शायद यह भी समझते हैं कि इन लोगों को अक्सर किस तरह के संघर्ष का सामना करना पड़ता था। मैं सच्चे भविष्यवक्ता और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर कैसे जान सकता हूँ? हो सकता है कि इस समय के दौरान यरूशलेम शहर के आस-पास के घरों में, रात में इस संदेश के बारे में बात करते हुए परिवारों में चर्चा हुई हो। अरे, हमने इस भविष्यवक्ता को यह कहते हुए सुना है, और हमने इस भविष्यवक्ता को वह कहते हुए सुना है।

हम किस पर विश्वास करते हैं? मीका के दिनों और यिर्मयाह के दिनों में मौजूद ज्यादातर झूठे भविष्यवक्ताओं ने अपनी पहचान बताने वाली टी-शर्ट नहीं पहनी थी। मैं एक आधिकारिक झूठा भविष्यवक्ता हूँ। कई बार, उन्होंने खुद को झूठे भविष्यवक्ताओं के रूप में प्रचारित नहीं किया जो बाल के नाम पर बोलते थे।

वे खुद को यहोवा के भविष्यवक्ता के रूप में पेश करते। और इसलिए, हम कैसे जानते हैं? और इसलिए मैं संघर्ष को समझता हूँ और यह कितना कठिन रहा होगा। हम कैसे पहचानें कि कौन सच्चा भविष्यवक्ता है और कौन झूठा भविष्यवक्ता? लेकिन उस समय देश में जो परिस्थितियाँ चल रही थीं, उनके प्रकाश में, ऐसा लगता है कि यह समझना बहुत स्पष्ट था कि परमेश्वर अपने लोगों पर अपना न्याय ला रहा था।

वाचा के अभिशाप प्रभावी होने वाले थे और लोगों को इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता थी। राष्ट्र ने जिस तरह से जीवन जिया था, वहाँ मौजूद सामाजिक पापों की प्रमुखता के प्रकाश में, मूर्तिपूजा और धार्मिक पापों के प्रकाश में जो अक्सर सबसे पहले इसका कारण थे, लोगों को यह स्पष्ट होना चाहिए था कि अगर उन्हें ईश्वर और इस्राएल के बीच वाचा की प्रकृति और उस रिश्ते के बारे में सही समझ थी, तो उन्हें यह स्पष्ट होना चाहिए था कि न्याय ही वह था जिसकी उन्हें उम्मीद करनी चाहिए। हालाँकि, इस संघर्ष के पीछे जो कुछ भी है, वह केवल दो अलग-अलग संदेशों के बीच संघर्ष नहीं है।

इन सबके पीछे एक बिलकुल अलग विचारधारा है। और अंततः, इन सब के धार्मिक आधार के बारे में सोचने की कोशिश करते हुए, अंततः वाचा की एक मौलिक रूप से अलग समझ है जो यशायाह, मीका और यिर्मयाह जैसे भविष्यवक्ताओं और इन झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश में परिलक्षित होती है जो शांति, शांति कह रहे थे, जबकि शांति नहीं है। वाचा की मौलिक रूप से

अलग समझ यह है कि मीका और यिर्मयाह जैसे भविष्यवक्ताओं ने इस विचार पर जोर दिया कि परमेश्वर ने इस्राएल के साथ जो वाचा बाँधी है, उसमें आशीर्वाद और जिम्मेदारी दोनों शामिल हैं।

इसमें वादे और आज्ञाएँ दोनों शामिल हैं। अगर हमने आज्ञाओं का पालन नहीं किया है, तो हमें आशीर्वाद की उम्मीद करने का कोई अधिकार नहीं है। अगर कोई वास्तव में अपनी आँखें खोलकर ईमानदारी से देखे कि उस समय समाज में क्या चल रहा था, सामाजिक और धार्मिक पाप जो वहाँ थे, तो लोगों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए था कि हम वफादार वाचा भागीदार नहीं रहे हैं, इसलिए हमें भगवान के आशीर्वाद और भगवान की सुरक्षा पर भरोसा करने का अधिकार नहीं है और यह कि भगवान हमारे सौभाग्यशाली हैं जो हमेशा हमारी रक्षा करने के लिए मौजूद रहेंगे।

मुझे लगता है कि आज हमें यह याद दिलाना ज़रूरी है कि परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता, चर्च के साथ परमेश्वर के रिश्ते के वे दो पहलू आज भी मौजूद हैं। इसमें आशीर्वाद और जिम्मेदारी दोनों हैं। हम परमेश्वर की कृपा पर भरोसा नहीं कर सकते।

अगर हमारी जीवनशैली हमारे द्वारा किए गए स्वीकारोक्ति को नहीं दर्शाती है और ईश्वर के प्रति समर्पण को नहीं दर्शाती है जो दूसरे लोगों को दिखाती है कि ईश्वर कैसा है, तो हमें यह उम्मीद करने का अधिकार नहीं है कि ईश्वर हमें आशीर्वाद देगा। एक राष्ट्र के रूप में हमें यह कहने का अधिकार नहीं है कि, ईश्वर अमेरिका को आशीर्वाद दे अगर हम ऐसे लोग नहीं हैं जिन्हें ईश्वर वास्तव में आशीर्वाद दे सकता है। ईश्वर का आशीर्वाद हमेशा वाचा की जिम्मेदारी और वाचा के दायित्व को साथ लेकर चलता है।

इस्राएल और यहूदा के लोग आशीर्वाद पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं; परमेश्वर हमेशा हमारे लिए मौजूद रहेगा, और परमेश्वर हमेशा हमारी रक्षा करेगा। वे अपनी वाचा की जिम्मेदारियों को भूल गए हैं। अगर इस्राएल और यहूदा के लोगों को वाचा की सही समझ होती, तो उन्हें यह स्पष्ट रूप से पता चल जाता कि हमें मीका के संदेश को गंभीरता से लेने की ज़रूरत है।

अंततः जब अश्शूर की सेना ने यरूशलेम शहर को घेर लिया, तो राजा हिजकियाह ने उस संदेश को गंभीरता से लिया। राजा का पश्चाताप और विश्वास अंततः पूरे राष्ट्र को आशीर्वाद देने वाला है। अब जब मीका इन झूठे भविष्यवक्ताओं का सामना कर रहा था और मीका इन मुद्दों से निपट रहा था, तो लोगों के लिए उसका संदेश सुनना मुश्किल हो गया।

मुझे लगता है कि यिर्मयाह जैसे भविष्यवक्ता के लिए आने वाली सदी में ये समस्याएँ और भी तीव्र हो जाएँगी। 701 ईसा पूर्व में जब परमेश्वर ने इस चमत्कारी तरीके से यरूशलेम शहर को बचाया और असीरियन सेना का ख्याल रखा, तो इससे यह धारणा और मजबूत हो गई कि यरूशलेम शहर हमेशा दुश्मन के हमले से अछूता रहा है। यह परमेश्वर की सुरक्षा और यरूशलेम शहर का उद्धार था।

यह आराधना का हिस्सा था और यह उन धार्मिक परंपराओं का हिस्सा था जिन्हें यरूशलेम शहर में मनाया जाता था। भजन संहिता में हमारे पास भजन 46 और भजन 48 और भजन 76 जैसे अंश हैं जो इस तथ्य का जश्न मनाते हैं कि जब प्रभु के शत्रु और इस्राएल के शत्रुओं ने यरूशलेम शहर

पर हमला किया, तो परमेश्वर ने अपने शहर की रक्षा की और परमेश्वर ने उनके लिए लड़ाई लड़ी। परमेश्वर ने अपने गृहनगर की रक्षा की।

भजन 132 की आयत 13 और 14 में कहा गया है कि प्रभु ने यरूशलेम को अपने निवास स्थान के रूप में चुना है। और इसलिए, जब मीका जैसा भविष्यवक्ता कह रहा था कि यरूशलेम को मलबे में बदल दिया जाएगा, तो वह सीधे उस विचारधारा को चुनौती दे रहा था। यिर्मयाह के लिए, 701 में शहर के उद्धार के बाद उस विचारधारा से निपटना और भी कठिन काम था।

और इसीलिए यिर्मयाह ने अपने प्रसिद्ध मंदिर उपदेश में अध्याय 7 में कहा है, "भ्रामक शब्दों पर भरोसा मत करो। इस विचार पर भरोसा मत करो, प्रभु का मंदिर, प्रभु का मंदिर, प्रभु का मंदिर। यह तथ्य कि मंदिर वहाँ है, हमारी रक्षा करेगा।"

तुमने परमेश्वर के निवास स्थान को लुटेरों का अड्डा बना दिया है क्योंकि तुमने वाचा के आशीर्वाद को वाचा की जिम्मेदारी से अलग कर दिया है। इसलिए, जब यिर्मयाह सौ साल बाद इसी संदेश का प्रचार करने जा रहा है, तो वे कहेंगे कि यह आदमी झूठा भविष्यवक्ता है। उसे मर जाना चाहिए। लेकिन मीका और यिर्मयाह, मैं चाहता हूँ कि हम यह समझें कि वे दोनों इस्राएल से परमेश्वर के वादों की गलत समझ का सामना कर रहे हैं।

भजन संहिता में भी, जैसा कि इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि प्रभु यरूशलेम की रक्षा करने जा रहे हैं, प्रभु यरूशलेम की रक्षा करने जा रहे हैं, प्रभु हस्तक्षेप करने जा रहे हैं और शहर को उसके दुश्मनों से बचाने जा रहे हैं, इन सबके पीछे एक अंतर्निहित धर्मशास्त्र था, कि यदि लोग ईश्वर के आशीर्वाद का आनंद लेना चाहते हैं, तो उन्हें ऐसे लोग होने चाहिए जो उस आशीर्वाद के योग्य हों। यदि ईश्वर यरूशलेम शहर को अपने निवास स्थान के रूप में सुरक्षित रखने जा रहे थे, तो यह एक ऐसा शहर होना चाहिए जो प्रभु की महिमा और पवित्रता और पवित्रता को दर्शाता हो। भजन संहिता में परंपरा का एक हिस्सा सिर्फ यह नहीं है कि ईश्वर सिंथोन के लिए लड़ता है, बल्कि भजन संहिता 15 और भजन संहिता 24 में, ईश्वर की पवित्र पहाड़ी पर रहने का अधिकार किसे है? जिनके हाथ साफ और दिल साफ हैं।

और इसलिए उन्होंने भजन 46 या भजन 48 या भजन 76 के वादों पर प्रकाश डाला था, और यिर्मयाह के दिन, उन्होंने 701 की ओर इशारा किया था और कहा था, परमेश्वर अब हमें उसी तरह से छोड़ा जाएगा जैसे उसने छोड़ा था, उसी तरह से जैसे उसने हमें तब छोड़ा था। भविष्यवक्ताओं को उस झूठी विचारधारा का सामना करना होगा। यदि लोग चाहते हैं कि यरूशलेम शहर परमेश्वर द्वारा सुरक्षित रहे, तो उन्हें अपने स्वयं के हथियारों और अपने स्वयं के हथियारों और सैन्य संसाधनों पर अपने विश्वास और भरोसे को भी त्यागना होगा, और उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करना होगा।

यह भजनों की परंपरा का भी हिस्सा था। कुछ लोग घोड़ों पर भरोसा करते हैं, और कुछ लोग रथों पर। हम अपना भरोसा अपने प्रभु परमेश्वर पर रखते हैं।

तो, मीका, यिर्मयाह से पहले के समय में, यशायाह भी यही करने जा रहा है। वे सिथ्योन परंपरा की गलत समझ का सामना करने जा रहे हैं। चाहे कुछ भी हो, परमेश्वर यरूशलेम की रक्षा नहीं करेगा।

याद रखें कि उसने शिलोह के साथ क्या किया। यदि यरूशलेम वैसा शहर नहीं है जैसा परमेश्वर चाहता है और जैसा वह चाहता है, तो परमेश्वर उसका न्याय करेगा, और यही वह संघर्ष है जो मीका द्वारा इस संदेश का प्रचार करते समय चल रहा है। यही एक कारण है कि लोगों के लिए यह संदेश सुनना इतना कठिन है।

तो, हम इस पहले भाग को अध्याय एक में आने वाले न्याय के साथ समाप्त करते हैं। असीरियन सेना आगे बढ़ती है। अध्याय दो में, एक स्पष्टीकरण है।

यहाँ बताया गया है कि न्याय क्यों होने जा रहा है। जैसा कि हम पुस्तक के दूसरे भाग को खोलते हैं, मीका फिर से इस भाग की शुरुआत उन पापों को स्थापित करके करने जा रहा है जो परमेश्वर के न्याय का आधार बनते हैं। यह फिर से अन्याय का अभ्यास और भविष्यद्वक्ताओं का झूठा संदेश है जिसने लोगों को गुमराह किया है।

लेकिन ध्यान दें कि वह अध्याय तीन में ऐसा कैसे करता है। मुझे लगता है कि जब आप भविष्यद्वक्ताओं को पढ़ते और अध्ययन करते हैं तो आप उनसे प्यार करने और उनकी सराहना करने लगते हैं, वह यह है कि आप उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रूपकों और छवियों की समृद्धि से प्यार करने और उनकी सराहना करने लगते हैं, दोनों नकारात्मक और सकारात्मक तरीकों से। अध्याय तीन की शुरुआत में एक शक्तिशाली रूपक है जो इस्राएल और यहूदा के राष्ट्रों की दुष्टता और अन्याय को दर्शाता है।

नबी ने यह कहा, और मैंने कहा, हे याकूब के मुखियाओं और इस्राएल के घराने के शासकों, क्या न्याय जानना तुम्हारे लिए नहीं है? ठीक है, हम फिर से सामाजिक न्याय के मुद्दे पर वापस आ गए हैं। तुम जो अच्छे से नफरत करते हो और बुराई से प्यार करते हो। अब, यहाँ से रूपक शुरू होता है।

तुम मेरे लोगों की खाल और उनकी हड्डियों से मांस नोचते हो। तुम मेरे लोगों का मांस खाते हो। तुम उनकी खाल नोचते हो, और उनकी हड्डियों को टुकड़े-टुकड़े कर देते हो।

आप उन्हें बर्तन में मांस की तरह और कड़ाही में मांस की तरह काटते हैं। और इन नेताओं का ध्यान आकर्षित करने और उनके द्वारा किए गए अपराधों की भयावह प्रकृति को देखने में उनकी मदद करने के लिए, यहाँ पैगंबर ने उन्हें नरभक्षियों से तुलना की है। आप इन बेचारे लोगों को ले जा रहे हैं, आप उनकी खाल उतार रहे हैं और ऐसी चीजें कर रहे हैं जो असीरियन सेना के साथ सच होतीं, और आप उन्हें काट रहे हैं, आप उन्हें काट रहे हैं, और आप उन्हें एक बर्तन में डाल रहे हैं, और आप उन्हें स्टू की तरह पका रहे हैं।

और फिर, मुझे लगता है कि यह एक ऐसा संदेश होता जिसे इन लोगों के लिए पचाना बहुत मुश्किल होता। यहाँ व्यंग्य क्षमा करें। वाह, क्या भगवान वास्तव में हमें नरभक्षी की तरह देखते हैं? हम बस न्याय करने की कोशिश कर रहे हैं।

और मुझे लगता है कि वे अक्सर मूसा के कानून और कर्ज गुलामी के बारे में प्रावधानों का इस्तेमाल करते होंगे, वे कानून को तोड़ने के लिए कानूनी तौर पर कानून का इस्तेमाल करते होंगे। और वे खुद को इस तरह से नहीं देखते हैं। परमेश्वर चाहता है कि वे समझें कि वह वास्तव में उनके पापों और उनके अपराधों के बारे में क्या सोचता है।

भगवान की नज़र में, आप जो कर रहे हैं, आप नरभक्षी से अलग नहीं हैं। सज़ा अपराध के अनुरूप होगी क्योंकि ये लोग जिन्होंने दूसरों के साथ दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार किया है और उनका फ़ायदा उठाया है, ये लोग जो दूसरों के साथ इस भयानक अमानवीय व्यवहार में लगे हुए हैं, श्लोक चार, जब वे भगवान को पुकारते हैं, तो वे उनका जवाब नहीं देंगे। वह उस समय उनसे अपना चेहरा छिपाएगा क्योंकि उन्होंने अपने कामों को रा'आह बना दिया है।

और एक अर्थ में, जिस तरह से मीका की पुस्तक इस्राएल और यहूदा में योना की पुस्तक के बाद आने वाले रा'ह के अभ्यास पर जोर देती है, एक अर्थ में, जब हम 12 की पुस्तक में उनके संरेखण में इन दो पुस्तकों की तुलना करते हैं, तो हम पाते हैं कि सामरिया और यरूशलेम निनवे से अलग नहीं हैं। और यहूदा के नेताओं को अपने अपराधों की गंभीरता का एहसास होना चाहिए। वे बिल्कुल नरभक्षी की तरह हैं।

जब भविष्यवक्ता यशायाह, और फिर से, कई मायनों में, यशायाह और मीका के संदेश, हम देखते हैं कि वे कैसे एक दूसरे के पूरक हैं। यशायाह इस्राएल और यहूदा के नेताओं, विशेष रूप से यरूशलेम के नेताओं की तुलना करने जा रहा है। वह उनसे इस तरह बात करने जा रहा है जैसे कि वे सदोम और अमोरा के शासक हों।

और वाह, भगवान के गृहनगर के नेताओं की तुलना सदोम और अमोरा के लोगों से की गई है। वह कहेगा, जब तुम प्रार्थना में अपने हाथ मेरी ओर उठाओगे, तो मैं उन प्रार्थनाओं को नहीं सुनूंगा। मैं तुम्हारी पुकार नहीं सुनूंगा।

मीका यहाँ भी यही बात कहता है। और इसका कारण यह है कि जब आप अपने हाथ भगवान की ओर उठाते हैं, तो मैं देखता हूँ कि आपने अपने पड़ोसियों पर जिस तरह से अत्याचार किया है और उनका फ़ायदा उठाया है, उसमें खून-खराबा है। यशायाह ने उनकी तुलना हत्यारों से की है।

मीका ने उनकी तुलना नरभक्षियों से की है। और मुझे फिर से यकीन है, उन्होंने विरोध किया होगा और कहा होगा, अरे, हम इस तरह की हिंसा के दोषी नहीं हैं। लेकिन उस व्यवस्था में जो परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल में स्थापित की थी, और जिस तरह से परमेश्वर ने कानून दिया था और उन्हें बताया था कि उन्हें अपने पड़ोसियों के साथ न्यायपूर्ण और निष्पक्ष और उदार व्यवहार करना चाहिए, जिस तरह से परमेश्वर ने प्रत्येक इस्राएली को भूमि का अपना उत्तराधिकार और प्रत्येक परिवार को भूमि का अपना उत्तराधिकार प्रदान किया था, जब ये नेता उन चीज़ों को छीनने के लिए अन्यायपूर्ण तरीकों का उपयोग कर रहे थे, भले ही यह उस तरह से कानूनी लग रहा था,

जिस तरह से वे ऐसा कर रहे थे, परमेश्वर की नज़र में, दूसरों को उनकी जीविका कमाने या उनके परिवार और उनकी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता से वंचित करके, वे हत्यारों और नरभक्षियों से अलग नहीं थे।

और इसलिए भविष्यवक्ता मीका हमें उन वाचा संबंधी जिम्मेदारियों की गंभीरता की याद दिलाने जा रहा है जो परमेश्वर ने इस्राएल पर डाली हैं। और इसलिए ही अध्याय 3, पद 12 में इस संदेश के अंत में, सिथ्योन को खेत की तरह जोता जाएगा, यरूशलेम खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और भवन का पहाड़ जंगल की ऊँचाई बन जाएगा। पश्चाताप के बिना, हृदय परिवर्तन के बिना, दिशा परिवर्तन के बिना, और व्यवहार में परिवर्तन के बिना, यहूदा के राज्य के साथ यही होने जा रहा है।

लेकिन जब कोई भविष्यवक्ता इस तरह का संदेश देता है तो हमेशा ऐसा हो सकता है कि अगर सही तरह की प्रतिक्रिया होती तो परमेश्वर नरम पड़ जाता और अपना मन बदल लेता। हमने देखा कि निनवे शहर में, उन्होंने अपने द्वारा किए गए बुरे कामों के लिए पश्चाताप किया और परमेश्वर ने नरमी दिखाई और न्याय नहीं भेजा। अब, जब वे बाद में उस बुराई पर लौटते हैं, 150 साल बाद, नहूम परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करेगा जो निनवे पर आने वाला है और शहर अंततः नष्ट हो जाएगा।

यही हुआ: मीका ने यरूशलेम के पूर्ण बिना शर्त विनाश की घोषणा की। और अगर चीजें नहीं बदली होतीं, तो आठवीं शताब्दी में यही होता। लेकिन मीका के संदेश और हिजकिय्याह के पश्चातापपूर्ण जवाब के कारण, परमेश्वर ने न्याय में देरी की।

परमेश्वर यरूशलेम को नष्ट करने से पीछे हट जाता है, और परमेश्वर अपना मन बदल लेता है। अब, बाद में, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं और बेबीलोन के संकट के समय में जाते हैं, हम भविष्यवक्ताओं यिर्मयाह और यहजकेल के पास जाते हैं, और हम सपन्याह और हबक्कूक जैसे लोगों के संदेश पर जाते हैं कि यरूशलेम अपने पापी मार्गों पर लौट आया है। इसके परिणामस्वरूप, मीका द्वारा मूल रूप से घोषित न्याय का संदेश फिर से प्रभावी हो जाता है।

नहूम और निनवे की तरह, परमेश्वर अंततः यहाँ भी न्याय करता है जो विलंबित है। लेकिन इस सब में हमें जो याद दिलाया जाता है वह है अद्भुत लेन-देन जो घटित होता है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को पश्चाताप करने और अपने तरीके बदलने का अवसर देता है ताकि इस न्याय को टाला जा सके। परमेश्वर अंतिम निर्णय लेता है और यह तय करता है कि वह न्याय करेगा या उद्धार, लोगों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है।

हमारी प्रतिक्रियाएँ वास्तव में मायने रखती हैं। वे जीवन और मृत्यु का मामला हैं। और इसलिए पूरे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और पूरे पुराने नियम में, जब परमेश्वर न्याय की घोषणा करता है, और लोग मध्यस्थता करते हैं और प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर नरम पड़ जाता है, और परमेश्वर अपना मन बदल लेता है।

जब भविष्यवक्ता घोषणा करते हैं कि परमेश्वर न्याय करने जा रहा है और हिजकिय्याह जैसा राजा इसे गंभीरता से लेता है या निनवे का राजा इसे गंभीरता से लेता है और वह उपवास की घोषणा

करता है और उसके लोग पश्चाताप करते हैं, तो परमेश्वर उन निर्णयों का सम्मान करता है। परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया जीवन और मृत्यु का मामला है और वास्तविक परिवर्तन तब हो सकता है जब लोग परमेश्वर को सही तरीके से जवाब दें। फिर से, हमारे पास मीका की सेवकाई में यिर्मयाह 18, 7-10 के सिद्धांत का एक और उदाहरण है।

अगर परमेश्वर न्याय की घोषणा करता है और लोग पश्चाताप करते हैं, तो परमेश्वर नरम पड़ जाएगा, परमेश्वर अपना मन बदल लेगा। और इसके विपरीत भी सत्य है। यहाँ एक अर्थ में परमेश्वर अनंत काल से बाहर निकल आया है।

उसने लोगों के साथ इस तरह के लेन-देन के रिश्ते बनाए हैं, और जैसे-जैसे वे उसके प्रति जवाब देते हैं और उसके वचन का सम्मान करते हैं, और जैसे-जैसे वे पश्चातापी और आज्ञाकारी प्रतिक्रिया देते हैं, परमेश्वर उनके विरुद्ध दिए गए न्याय को वापस लेने के लिए तैयार हो जाता है। अब, हाल के वर्षों में, परमेश्वर के अपने मन को बदलने का विचार एक प्रमुख धार्मिक विवाद बन गया है। और मुझे नहीं लगता कि पुराने नियम में परमेश्वर के अपने मन को बदलने की यह कल्पना किसी भी तरह से यह विचार या निष्कर्ष निकालती है कि परमेश्वर के पास भविष्य के बारे में सीमित ज्ञान है।

कुछ अर्थों में, ईश्वर की सभी भाषाओं की तरह, यह भी रूपक है। ईश्वर अंत से लेकर आरंभ तक सब कुछ जानता है। लेकिन यहाँ फिर से जो चल रहा है वह यह है कि ईश्वर समय में और इन वास्तविक रिश्तों में कदम रख चुका है और ईश्वर इन रिश्तों में शामिल होता है ताकि लोग और उनकी प्रतिक्रियाएँ अंततः मायने रखें।

आमोस जैसे भविष्यद्वक्ता की प्रार्थनाएँ या मूसा जैसे भविष्यद्वक्ता की प्रार्थनाएँ जब वह लोगों के लिए हस्तक्षेप करता है और न्याय की घोषणा की जाती है, वे मायने रखती हैं। हिजकिय्याह का पश्चाताप जब मीका उसे चेतावनी देता है कि न्याय आने वाला है; यह मायने रखता है। और इसलिए परमेश्वर अपनी सनक के कारण मनमाने ढंग से अपना मन नहीं बदलता।

आप जानते हैं, मैं हर समय मनमौजी ढंग से अपना मन बदल लेता हूँ। मैं आज सलाद खाने जा रहा हूँ, और मैं खाने जा रहा हूँ, और फिर मैं पापा जॉन के पास से गुज़रता हूँ, और मैं मनमौजी ढंग से अपना मन बदल लेता हूँ। जब पुराना नियम परमेश्वर के मन बदलने की बात करता है, तो वह इस बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि वह किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहा है जो परमेश्वर की एक बहुत ही वास्तविक विशेषता या विशेषता है।

यह ईश्वर के बारे में एक रूपक है, लेकिन यह केवल एक रूपक नहीं है। ईश्वर वास्तव में, अंततः, अपने अंतिम निर्णयों और घटनाओं के अंतिम परिणामों को इस आधार पर बदलता है कि लोग उसके प्रति किस तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। कुछ अंशों की दुविधा भी है जैसे कि संख्या की पुस्तक में, संख्या अध्याय 23 में या 1 शमूएल 15 में, पुराने नियम के ऐसे अंश हैं जो हमें बताते हैं कि ईश्वर अपना मन नहीं बदलता है।

और फिर हम इस तरह के अंशों से टकराते हैं जिन्हें हमने अभी देखा है: यिर्मयाह 26, योना अध्याय 3, यिर्मयाह अध्याय 18, निर्गमन अध्याय 32, और आमोस अध्याय 7। परमेश्वर अपना मन

बदलता है। हम इससे कैसे निपटते हैं? खैर, जिस तरह से हम इससे निपटते हैं उसका एक हिस्सा केवल यह कहना नहीं है कि, ठीक है, जिन स्थानों पर परमेश्वर अपना मन नहीं बदलता है, वह वास्तव में ऐसा ही है, और ये अन्य स्थान केवल रूपक हैं। वे दोनों पुराने नियम के परमेश्वर के गुण हैं।

लेकिन हम यह महसूस करते हैं कि कुछ निश्चित परिस्थितियाँ और कुछ निश्चित परिस्थितियाँ होती हैं जहाँ परमेश्वर जवाब देता है और कहता है, मैं अपना मन नहीं बदलूँगा। जब परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से वाचा का वादा किया है, भले ही संख्या 22 से 24 में बालाम जैसा भविष्यवक्ता खड़ा होकर उन्हें शाप देने की कोशिश करता है, परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि वह झूठ बोले और न ही वह मनुष्य का पुत्र है कि वह अपना मन बदल ले। परमेश्वर उन वाचा के वादों से पीछे नहीं हटेगा जो उसने किए हैं और जिन्हें पूरा करने की उसने शपथ ली है।

और मेरे मित्र, माइक ग्रिसंती, जब इस मुद्दे पर बात करेंगे, तो वे वाचा के उन वादों के बारे में बात करेंगे जो परमेश्वर ने इस्राएल को लंगर के रूप में दिए हैं। ये ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में वे जानते हैं कि परमेश्वर उनसे पीछे नहीं हटेगा और परमेश्वर अपना मन नहीं बदलेगा। ऐसी परिस्थितियाँ भी हैं, जैसे कि 1 शमूएल 15 में जहाँ परमेश्वर ने राजा शाऊल को अस्वीकार कर दिया था, जब प्रभु ने कहा था, मैं यह करने जा रहा हूँ, मैं अपनी कार्यवाही के तरीके को नहीं बदलूँगा, मैं नहीं बदलने जा रहा हूँ, भले ही शमूएल पूरी रात प्रार्थना करता है और महसूस करता है कि ऐसी परिस्थितियाँ हैं जहाँ परमेश्वर प्रार्थनाओं के लिए खुला और उत्तरदायी है, जब परमेश्वर ने शपथ ली है या जब कोई व्यक्ति एक सीमा पार कर गया है और परमेश्वर ने कहा है, मैं नहीं बदलने जा रहा हूँ, उन मामलों में परमेश्वर अपना मन नहीं बदलता है।

लेकिन इन अन्य मामलों में और अधिकांश समय जब भविष्यवक्ता उपदेश दे रहे होते हैं, और फिर, जब वे न्याय के बारे में पूर्ण कथन करते हैं, तब भी हमेशा संभावना होती है कि यदि परमेश्वर के संदेश पर सही प्रतिक्रिया होती है, तो परमेश्वर नरम पड़ जाएगा और वह न्याय नहीं भेजेगा जिसकी उसने धमकी दी है। भविष्यवक्ता मीका के पास यहूदा के लोगों को उपदेश देने के लिए एक गंभीर संदेश था। वह उन्हें याद दिला रहा है कि परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में आशीर्वाद और जिम्मेदारी दोनों शामिल हैं।

और हिजकिय्याह की उस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण, यहूदा को अंततः अशूर के हाथों विनाश के न्याय से बचा लिया गया। मीका हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में आशीर्वाद और जिम्मेदारी भी शामिल है और यह कि हमारे पास एक जिम्मेदारी है क्योंकि परमेश्वर ने हमसे ये अद्भुत वादे किए हैं कि हम आज्ञाकारिता और पश्चाताप के साथ जवाब दें और परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसके जवाब में उस तरह का जीवन जीने की इच्छा रखें जिसे जीने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। मीका, एक भविष्यवक्ता के रूप में, हमें इस बात की उचित समझ की याद दिलाता है कि परमेश्वर के साथ संबंध वास्तव में क्या है।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 20, मीका 1-3, मीका का संदेश है